कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में स्त्री विमर्श

'कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में स्त्री विमर्श' शीर्षक शोध प्रबंध द्वारा हिंदी और असमिया साहित्य की दो शीर्षस्थ लेखिकाओं कृष्णा सोबती और इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों का स्त्री विमर्श के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी ने अपनी रचनाओं के द्वारा एक बहुभाषीय राष्ट्र की दो भाषाओं हिंदी तथा असमिया के माध्यम से दो भिन्न भू-भाग, पश्चिमोत्तर और पूर्वोत्तर के समाज में स्त्री की स्थिति, उसके संघर्ष का चित्रण करते हुए स्त्री चेतना के स्वर को मुखर किया है। कृष्णा सोबती का जन्म 18 फरवरी 1925 में हुआ था। पचास के दशक में लेखन शुरू करने वाली कृष्णा सोबती 2019 तक लेखन में सक्रिय रहीं। इंदिरा गोस्वामी का जन्म 14 नवंबर 1941 में हुआ था। 13 वर्ष की छोटी आयु से लेखन शुरू करने वाली इंदिरा गोस्वामी 2009 तक लेखन में सक्रिय रहीं। स्त्री मन के यथार्थ को चित्रित करने वाली कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी अपने विभिन्न लेखों, वक्तव्यों और साक्षात्कारों के माध्यम से स्वयं को स्त्रीवादी लेखिकाओं की श्रेणी में रखे जाने की पक्षधर नहीं रहीं तथापि इसमें कोई संदेह नहीं कि कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के साहित्य में चित्रित स्त्री जीवन के विविध मुद्दों और स्त्री अस्मिता के प्रश्नों ने भारतीय संदर्भ में स्त्री विमर्श को नई दिशा दी। अस्सी के दशक में फेमिनिज़्म की दूसरी लहर से भी पूर्व जहां कृष्णा सोबती के उपन्यास 'मित्रो मरजानी' द्वारा स्त्री यौनिकता का विषय हिंदी साहित्य में पहली बार विमर्श के केंद्र में आया, वहीं इंदिरा गोस्वामी के उपन्यास 'नीलकंठी ब्रज' में धार्मिक स्थल में हो रहे स्त्री-शोषण के विशद चित्रण ने असमिया कथा साहित्य की धारा और पाठकों की सोच को बदल दिया। 1926 में वर्जीनिया वुल्फ़ ने 'वुमन एण्ड फिक्शन' निबंध के माध्यम से स्त्री भाषा से जुड़े प्रश्नों को उठाया था। स्त्रीवादी लेखिकाओं लुईस ऐरिगरी, हेलेन सिक्सू, मोनिका वीटिंग, सांद्रा गिल्बर्ट, सुसान गुबर, दिलयुजी तथा गुएतरी इत्यादि ने स्त्री भाषा के विभिन्न पक्षों पर अपनी बात रखते हुए स्त्री भाषा को पुरुष भाषा से भिन्न बताया है। 1976 के निबंध 'द लॉफ ऑफ द मेडुसा' में हेलेन सिक्सू स्त्री लेखन के लिए 'ऐक्रीचर फेमिनाइन' (Ecriture Feminine) शब्द गढ़ती हैं। लेकिन हम देखते हैं कि इन निबंधों के प्रकाशित

होने से पूर्व ही कृष्णा सोबती 'डार से बिछुड़ी' तथा 'मित्रो मरजानी' के द्वारा स्त्री लेखन की विशिष्ट शैली ईजाद कर चुकी थीं। इसी प्रकार इंदिरा गोस्वामी के स्त्री पात्रों सौदामिनी, मृणालिनी, शशिप्रभा, निर्मला तथा गिरिबाला इत्यादि द्वारा जिस भाषा का व्यवहार किया गया है, वह स्त्री भाषा का नया तेवर है। कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के स्त्री विमर्श की यह विशेषता है कि एक ओर वे पुरुष को स्त्री के प्रतिपक्ष में खड़ा करने के बजाय परिस्थितियों और घटनाओं को निष्पक्ष दृष्टि से देखते हुए विवादास्पद मुद्दों को उभार कर स्त्री अस्मिता के संकट को प्रस्तुत करती हैं तो दूसरी ओर स्त्री सशक्तिकरण का पथ विस्तृत करती हैं|

अध्यायों का क्रमिक सारांश निम्नवत है-

अध्याय 1- स्त्री विमर्श: अवधारणा, स्वरूप और वैश्विक स्तर पर स्त्री चेतना का उदय एवं नारीवादी आंदोलन

इस अध्याय के अंतर्गत चार उप अध्याय हैं। प्रथम उप अध्याय 'स्त्री विमर्श: अवधारणा एवं स्वरूप' के अंतर्गत स्त्री विमर्श की वैचारिक पृष्ठभूमि को समझने का प्रयास किया गया है। स्त्री विमर्श एक ऐसा विमर्श है जिसमें स्त्रियों के लिए एक समान राजनैतिक, शैक्षिक, आर्थिक तथा सामाजिक अधिकारों की बात की जाती है। वैश्विक स्तर पर स्त्री विमर्श के विभिन्न संप्रदाय यथा 'लिबरल फेमेनिज़्म', 'रेडिकल फेमेनिज़्म', 'समाजवादी', 'इको फेमेनिज़्म' तथा 'ब्लैक फेमेनिज़्म' इत्यादि की विशिष्टताओं को रेखांकित करने के साथ ही इनके मूल मंतव्य को रेखांकित किया गया है। स्त्री विमर्श को चाहे कितने ही भागों में वर्गीकृत किया जाए परंतु सभी का उद्देश्य स्त्रियों की दोयम स्थिति से मुक्ति तथा उसे मानवीय रूप से प्रतिष्ठित करना है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था का पर्त दर पर्त विश्लेषण करते हुए 'स्त्री विमर्श' स्त्री की दोयम सामाजिक स्थिति के विरुद्ध अपनी आवाज बुलंद करता है। द्वितीय उप अध्याय के अंतर्गत वैश्विक स्तर पर स्त्री चेतना के उदय एवं विकास के क्रम को समझने का प्रयास किया गया है। स्त्री समाज के शोषण तथा उत्पीड़न का विरोध करते हुए स्त्री-मुक्ति की दिशा में कदम उठाना स्त्री चेतना के फलस्वरूप संभव हो पाया है। राजतंत्र से मुक्ति की मांग से उठी 1789 की फ्रांसीसी क्रांति, 1848 में

ऐलिजाबेथ कैंडी स्टेटन तथा लुक्रेसिया कफिन मोर इत्यादि द्वारा नारी स्वतंत्रता का घोषणा पत्र जारी करना, जे. ऐस. मिल द्वारा स्त्री मताधिकार का प्रस्ताव रखा जाना तथा 19 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भारत में नवजागरण की लहर, ये चार प्रमुख घटनाएं हैं जिनके माध्यम से वैश्विक स्तर पर स्त्री चेतना का प्रसार हुआ। फ्रांसीसी क्रांति के दौरान गठित 'विमेंस रेवोल्यूशनरी क्लब्स' विश्व के प्रथम नारी संगठन माने जाते हैं। ओलिम्पी द गूजे के घोषणा पत्र तथा मेरी वोल्सटन क्राफ्ट की पुस्तक 'स्त्रियों के अधिकारों का औचित्य-प्रतिपादन' से प्रारम्भिक नारीवादी आंदोलनों की रूपरेखा को समझा जा सकता है। तृतीय उपअध्याय 'नारीवादी आंदोलन: पाश्चात्य' के अंतर्गत फ्रांस, इंग्लैंड तथा अमेरिका के नारीवादी आंदोलनों पर प्रकाश डाला गया है। चतुर्थ उपअध्याय 'नारीवादी आंदोलन: भारत' के अंतर्गत स्वतंत्रता पूर्व के नारीवादी आंदोलन तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात के नारीवादी आंदोलनों का विवेचन किया गया है। भारत में स्त्री संगठनों तथा पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से किस प्रकार स्त्री चेतना का प्रसार हो रहा था इसका तथ्यपूर्ण विवेचन किया गया है। इसके पश्चात स्त्री लेखन के माध्यम से स्त्री विमर्श को समझने का प्रयास किया गया है। छठी शताब्दी के पालि भाषा में रचित बौद्ध ग्रंथ 'थेरीगाथा' में संकलित बौद्ध भिक्षुणियों के गीत विश्व के प्रथम स्त्रीलेखन में गिने जाते हैं। मध्यकालीन भक्त कवयित्रयों लालदेद, बहनाबाई, मीराबाई की रचनाओं में परिवार की संकीर्ण विचारधाराओं, रीति-रिवाजों के प्रति विद्रोह स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। अक्क महादेवी, सुले संकावा, जनाबाई रामी, गंगासती, रतनबाई, मोला, बहिनाबाई तथा तारीगोंदा इत्यादि ने अपनी रचनाओं द्वारा स्त्री लेखन की आधारशिला रखी। महादेवी वर्मा तथा सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने लेखन के माध्यम से स्त्री विमर्श के भारतीय परिप्रेक्ष्य को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया। इक्कीसवीं सदी का नारीवाद स्त्री की व्यावहारिक छवि का पक्षधर है। कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के लेखन में स्त्री विमर्श की वैचारिकी को समझने का प्रयत्न इस अध्याय में किया गया है|

अध्याय 2- कृष्णा सोबती और इंदिरा गोस्वामी: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

द्वितीय अध्याय में कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। इसके अंतर्गत चार उप अध्याय हैं। इस अध्याय के उप अध्याय कृष्णा सोबती: प्रारम्भिक जीवन एवं व्यक्तित्व में 'लेखक के रूप में स्वतंत्र पहचान', 'लेखकीय दायित्वों के प्रति सजग', 'नारी स्वतंत्रता की पक्षधर किन्तु नारीवाद को अस्वीकृति' तथा 'हिंदी साहित्य में भाषाई विविधता की पक्षधर' बिंदुओं के अंतर्गत कृष्णा सोबती के व्यक्तित्व की विवेचना की गई है उनके दो उपन्यास 'गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान' तथा 'चन्ना' क्रमशः 2017 तथा 2019 में प्रकाशित हुए हैं। उनकी अन्य रचनाओं के अतिरिक्त इन दो उपन्यासों का विश्लेष्णात्मक तथा समीक्षात्मक वर्णन भी इस अध्याय में किया गया है। अध्याय लेखन में कृष्णा सोबती के व्यक्तित्व से संबंधित पहलुओं पर गंभीरता से प्रकाश डालने वाली गिरिधर राठी द्वारा लिखित कृष्णा सोबती की जीवनी 'दूसरा जीवन' पुस्तक से बहुत सहायता मिली|

इंदिरा गोस्वामी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विषय में हिंदी में बहुत कम पठन सामग्री है। अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध उनके विभिन्न साक्षात्कारों, तथा उनके साहित्य पर आलोचनात्मक रचनाओं के माध्यम से हिंदी में उनसे संबंधित पठन सामग्री के विस्तार का प्रयास किया गया है। इंदिरा गोस्वामी के साक्षात्कार वीडियो माध्यम तथा प्रिन्ट फॉर्म में भी उपलब्ध हैं इसके अतिरिक्त इंदिरा गोस्वामी की आत्मकथा 'जिंदगी कोई सौदा नहीं' में भी उनके जीवन तथा व्यक्तित्व का वर्णन सन 1970 तक उपलब्ध है। समकालीन असमिया लेखकों के वृतांतों के माध्यम से भी उनके व्यक्तित्व को समझने का प्रयास किया गया है। कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के जीवन तथा व्यक्तित्व का अध्ययन करने पर कुछ महत्वपूर्ण तथ्य प्रकाश में आए, यथा-

1. कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी ने स्त्री लेखक के परिचय के बाहर एक स्वतंत्र लेखक के रूप में अपनी पहचान स्थापित की|

2. दोनों साहित्यकारों का जन्म तथा परवरिश तथाकथित उच्च शिक्षित वर्ग में होने के बावजूद दोनों ही साहित्यकारों ने समाज के शोषित वर्ग का अपनी रचनाओं में यथार्थपरक वर्णन किया है|
3. कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी ने अपने-अपने प्रांतों से जुड़े विषयों को चित्रित करने के साथ ही भारत के अन्य भू-भागों को भी अपनी लेखनी के केंद्र में रखा|
4. कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी ने इस तथ्य पर जोर दिया है कि लेखकों को राजनीति से नहीं जुड़ना चाहिए परंतु इंदिरा गोस्वामी ने असम में शांति बहाली के लिए सरकार तथा उल्फा नेताओं में परस्पर संवाद कायम कराने के लिए मध्यस्थ की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है|

अध्याय 3- कृष्णा सोबती और इंदिरा गोस्वामी: स्त्री होने का अर्थ और स्त्री अस्मिता का संकट

इस अध्याय में सात उप अध्याय हैं जिनके अंतर्गत कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में स्त्री पात्र पारिवारिक मान्यताओं, अशिक्षा, विवाहेतर संबंध, वैधव्य, कार्यस्थल की विषमताओं तथा सामूहिक हिंसा की त्रासदियों के कारण किस प्रकार अस्मिता संकट से जूझते हैं इसका एक तुलनात्मक अध्ययन किया गया है|

समाज और परिवार की रूढ़ मान्यताएं स्त्री अस्मिता के संकट के मुख्य कारकों में से एक हैं तथा स्त्री-समाज के विकास के मार्ग में बाधक हैं। कृष्णा सोबती के उपन्यास 'डार से बिछुड़ी' की पाशो, 'मित्रो मरजानी' की धनवंती तथा सुहागवंती, 'ए लड़की' की वृद्धा अम्मू के माध्यम से रूढ़ पारिवारिक मान्यताओं में बंधी स्त्री के अस्मिता संकट को चित्रित किया गया है।

इंदिरा गोस्वामी के उपन्यास 'दक्षिणी कामरूप की गाथा' में वैष्णव सत्र की दामोदरिया गोसाइनों तथा 'नीलकंठी ब्रज' में अनुपमा, सौदामिनी और मृणालिनी के माध्यम से परिवार के भीतर धार्मिक कुरीतियों में जकड़े स्त्री पात्रों को चित्रित किया गया है|

गरीबी, निरक्षरता तथा अज्ञान भी स्त्री अस्मिता के संकट के मुख्य कारकों में गिने जाते हैं। कृष्णा सोबती का प्रथम उपन्यास 'डार से बिछुड़ी' में पाशो अशिक्षित है। उसके लिए जीवन की तमाम यंत्रणाओं से मुक्ति का माध्यम बस किसी बड़े घर में ब्याह दिए जाना है। उपन्यास 'चन्ना' में कम पढ़े-लिखे होने के कारण चन्ना की माँ शीला को पति धर्मपाल की अपेक्षा का शिकार होना पड़ता है। विवाह के मात्र एक वर्ष के भीतर ही धर्मपाल गाँव में पली-बढ़ी शीला को छोड़ कर बंबई की आधुनिका श्यामा को अपना लेता है|

इंदिरा गोस्वामी के उपन्यास 'दक्षिणी कामरूप की गाथा' में वैष्णव सत्र में अशिक्षा तथा अंधविश्वास के कारण अपने नागरिक अधिकारों से अनभिज्ञ दामोदरिया गोसाइनें कचहरी में औरतों का जाना शर्म की बात समझती हैं। उपन्यास 'छिन्नमस्ता' में शक्तिपीठ कामाख्या के पंडे के घरों की स्त्रियों का पूरा दिन मंदिर के यजमानों का खाना बनाने में ही बीत जाता है|

भारतीय समाज में वैधव्य का प्रश्न स्त्री अस्मिता के संकट से बहुत गहराई से जुड़ा हुआ है। कृष्णा सोबती के उपन्यास 'डार से बिछुड़ी', 'दिलोदानिश' तथा 'चन्ना' में वैधव्य से जुड़े अस्मिता संकट के प्रश्नों को उठाया गया है। 'डार से बिछुड़ी' में विधवा होने के उपरांत पाशो की दुर्दशा का एक नया अध्याय शुरू होता है। उपन्यास 'दिलोदानिश' की छुन्ना बीबी विधवा हैं इसलिए उन्हें अपशकुनी समझा जाता है|

इंदिरा गोस्वामी के उपन्यास 'दक्षिणी कामरूप की गाथा' में स्त्री पात्रों सारू गोसाइन, दुर्गा तथा गिरिबाला के माध्यम से वैष्णव सत्रों में विधवा दामोदरिया गोसाइनों के त्रासदपूर्ण जीवन का चित्रण किया गया है। उपन्यास नीलकंठी ब्रज मुक्ति प्राप्ति की लालसा में ब्रजधाम आई विधवाओं के दारुण जीवन को वृहद स्तर पर चित्रित करता है|

स्त्रियों ने जब से घर की दहलीज लांघ कर आत्मनिर्भर होने का मार्ग चुना है तब से कार्यस्थल पर महिला कर्मियों का दैहिक, मानसिक और आर्थिक शोषण भी शुरू हुआ है। उपन्यास 'यारों का यार' में मिस

तमाशा और मिस तमन्ना के माध्यम से कृष्णा सोबती ने सरकारी दफ्तर में पुरुष सहकर्मियों की स्त्री को मात्र देह समझने की मानसिकता को उजागर किया है|

इंदिरा गोस्वामी ने 'चेनाबेर स्रोत' की सोनी, 'मामरे धरा तारोवाल' की नारायणी तथा 'अहिरण' की नन्हीबाई के माध्यम से वर्कसाइट्स पर श्रमिक महिलाओं के अस्मिता संकट का विशद चित्रण किया है|

विभिन्न बिंदुओं के अंतर्गत इस तुलनात्मक अध्ययन से कुछ महत्वपूर्ण तथ्य प्रकाश में आते हैं, यथा जहां इंदिरा गोस्वामी धार्मिक कुप्रथाओं को स्त्री अस्मिता के संकट के मूल आधार के रूप में देखती हैं वहीं कृष्णा सोबती ने पारिवारिक दायित्वों के बोझ को स्त्री अस्मिता के संकट के मुख्य कारक के रूप में चित्रित किया है। इंदिरा गोस्वामी ने अशिक्षा से उत्पन्न स्त्री अस्मिता के संकट के विषय में कृष्णा सोबती की अपेक्षा अधिक विस्तार से लिखा है। कार्यस्थल पर स्त्री अस्मिता का संकट शिक्षित तथा अशिक्षित दोनों वर्ग की महिलाओं के लिए है परंतु इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में श्रमिक वर्ग की स्त्रियों के सामने, निर्धन और हरिजन होने के कारण स्त्री अस्मिता का संकट और भी कठिन तथा जटिल है। वैधव्य की कठिनाइयों के चित्रण में इंदिरा गोस्वामी की स्वानुभूति का भाव स्पष्टतया परिलक्षित होता है। कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में वैधव्य से जुड़े स्त्री अस्मिता के संकट का तुलनात्मक अध्ययन करने पर यह तथ्य सामने आता है कि भारत के प्रायः सभी राज्यों में विधवाओं की स्थिति दयनीय है परंतु असम में धार्मिक कर्मकांडों की रूढ़िवादी जटिलताओं के कारण विधवाओं की स्थिति अपेक्षाकृत अधिक त्रासपूर्ण तथा कष्टप्रद है। दोनों साहित्यकारों द्वारा सामूहिक हिंसा की शिकार महिलाओं की त्रासदियों का मार्मिक चित्रण किया गया है|

अध्याय 4- कृष्णा सोबती और इंदिरा गोस्वामी: स्त्री का संघर्ष और स्त्री अस्तित्व की स्वतंत्र पहचान

इस अध्याय में छः उपअध्याय हैं जिनके अंतर्गत कृष्णा सोबती और इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में स्त्री के संघर्षों तथा इन संघर्षों के मध्य अपनी एक स्वतंत्र पहचान स्थापित करते स्त्री पात्रों का तुलनात्मक

अध्ययन किया गया है। दोनों साहित्यकारों के स्त्री पात्र धार्मिक कुरीतियों, रूढ़िगत पारिवारिक मान्यताओं, दैहिक शोषण इत्यादि से संघर्ष करते हुए अपनी एक पहचान स्थापित कर पाए हैं। कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में स्त्री पात्रों का संघर्ष उपन्यास दर उपन्यास चलता है परंतु कालांतर के उपन्यासों में दोनों ही साहित्यकारों ने ऐसे स्त्री पात्रों को चित्रित किया है जो इन तमाम संघर्षों के बीच अपनी एक स्वतंत्र पहचान बना चुके हैं। कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के शुरुआती उपन्यासों के स्त्री पात्र क्रमशः मित्रो (मित्रो मरजानी), महकबानो (दिलोदानिश), सौदामिनी (नीलकंठी ब्रज) तथा गिरिबाला (दक्षिणी कामरूप की गाथा) इत्यादि जहां संघर्षशील चित्रित किए गए हैं वहीं अरण्या (समय सरगम), सोबतीबाई (गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान), 'तेज आरु धूलि धूसरित पृष्ठो' की अध्यापिका तथा थेंगफाखरी (थेंगफाखरीर तहसीलदारेर ताँबार तारोवाल) अपने अस्तित्व की स्वतंत्र पहचान अर्जित कर चुके पात्र हैं। संघर्ष की दृष्टि से जहां दोनों उपन्यासकारों के स्त्री पात्रों में साम्य दिखाई पड़ता है वहीं संघर्ष के तरीके और व्यक्तित्व की दृष्टि से दोनों साहित्यकारों के स्त्री पात्रों में वैषम्य दिखाई पड़ता है। कृष्णा सोबती के स्त्री पात्र मित्रो, महकबानो जहां हंसमुख, जिंदादिल, बेबाक और बोल्ड हैं वहीं सौदामिनी, गिरिबाला तथा सारू गोसाइन भावुक और अपेक्षाकृत समझौतावादी चित्रित किए गए हैं। मित्रो, महकबानों अपने विरोध में मुखर हैं वहीं सौदामिनी तथा गिरिबाला के विरोध का आधार साइलेंट ट्रीटमेंट है। सौदामिनी द्वारा आत्महत्या तथा गिरिबाला द्वारा आत्मदाह कायरता का प्रतीक होने के बजाय खोखली होती मान्यताओं के समक्ष आत्मसमर्पण न करने की दृढ़ता है। इस संबंध में दिब्यज्योति शर्मा अपनी पुस्तक 'Five Novellas About Women' में लिखते हैं, "Indira Goswami's vision of the world was the universal desire to transcend the norms of society and live the idealized individual life. While her characters usually fail to achieve this, what makes Goswami's writing important is this indomitable desire, this constant struggle to rise above one's station."(Five Novellas About Women, Translated by Dibyajyoti Sarma, Introduction)

अध्याय 5- कृष्णा सोबती और इंदिरा गोस्वामी की स्त्री दृष्टि

इस अध्याय के अंतर्गत कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी की स्त्री दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्याय के अंतर्गत चार उपअध्याय हैं। कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी की स्त्री दृष्टि को समझने के क्रम में सर्वप्रथम 'स्त्री दृष्टि' तथा 'साहित्य में स्त्री दृष्टि' का तथ्यपूर्ण विवेचन किया गया है। उपअध्याय 1 'स्त्री दृष्टि: अवधारणा तथा अर्थ विस्तार' के माध्यम से स्त्री की अवधारणा पर प्रकाश डाला गया है। स्त्री दृष्टि की सहायता से स्त्रियाँ सदियों की चुप्पी को तोड़ने में कामयाब रही हैं। इसके माध्यम से उनके व्यक्तिगत जीवन के उद्देश्य और उनके अपने अस्तित्व में सकारात्मक बदलाव आ रहे हैं। स्त्री दृष्टि से घटनाओं को समझने के परिणामस्वरूप स्त्रियाँ न केवल स्वयं के अधिकारों की मांग करती हैं वरन औरों के लिए भी रूढ़िवादी परंपराओं और मान्यताओं पर प्रश्न उठाती हैं। स्त्री दृष्टि के माध्यम से वे समझ चुकी हैं कि जिसे वह अपनी वास्तविकता समझ रही थीं वह पितृसत्तात्मक मानसिकता है जो उसे व्यक्ति न मान कर वस्तु की श्रेणी में रखती है। स्त्री दृष्टि, मिथकीय तहों में लिपटे स्त्री के स्वरूप को पर्त दर पर्त खोलने का प्रयास कर रही है। साहित्य की स्त्री दृष्टि को उपअध्याय 2 'साहित्य में स्त्री की सत्ता' शीर्षक के भीतर व्याख्यायित किया गया है। स्त्री दृष्टि से साहित्य के इतिहास के पुनर्मूल्यांकन से यह तथ्य उद्घाटित होता है कि स्त्री लेखन को वह स्थान नहीं मिला है जिसका वह हकदार है। भक्ति काल में मीरा के साहित्य को मात्र भक्ति साहित्य के अंतर्गत ही परखा गया जबकि मीराबाई के साहित्य के विश्लेषण से हम यह समझ पाते हैं कि किस प्रकार उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से रूढ़िवादी राजसत्ता और समाज को चुनौती दी थी।

उपअध्याय 3 में कृष्णा सोबती की स्त्री दृष्टि को उनके उपन्यासों के माध्यम से समझने का प्रयास किया गया है। कृष्णा सोबती की स्त्री दृष्टि एकाकी नहीं है। अपने उपन्यासों में चित्रित स्त्री पात्रों के माध्यम से वह स्त्री के हर रूप- समर्पित स्त्री, परिवार की बंदिशों में संतुष्ट स्त्री, यौनिक अभिव्यक्ति के प्रति मुखर स्त्री, आत्मनिर्भर तथा सजग स्त्री इत्यादि को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करती हैं। कृष्णा सोबती की स्त्री दृष्टि में उत्तरोत्तर विकास के तीन सोपान दिखाई पड़ते हैं। कृष्णा सोबती अपने प्रारम्भिक उपन्यासों में

जिस स्त्री दृष्टि का परिचय देती हैं वह स्त्री को वस्तु या सामाजिक, पारिवारिक संपत्ति न मान कर व्यक्ति मानने के दृष्टिबोध को जागृत करता है। 'डार से बिछुड़ी' की पाशो, 'तिन पहाड़' की जया ऐसे स्त्री पात्र हैं जो पितृसत्ता की रूढ़िवादी संरचना के विरोध में खड़े तो होते हैं परंतु इन पात्रों की अपनी सीमाएं हैं। 'मित्रो मरजानी' 'सूरजमुखी अंधेरे के' और 'दिलोदानिश' के माध्यम से कृष्णा सोबती ने संघर्ष करते स्त्री पात्रों को चित्रित करके स्त्री दृष्टि की व्यापकता का परिचय दिया है। एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था जहां स्त्री को सदैव दोयम दर्जा दिया गया है ऐसी संरचना में 'समय सरगम' की अरण्या और 'गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान' की सोबतीबाई जैसे पात्रों का सृजन उनकी परिपक्व स्त्री दृष्टि का परिचायक है|

उपअध्याय 4 में इंदिरा गोस्वामी की स्त्री दृष्टि को समझने का प्रयास किया गया है। इंदिरा गोस्वामी के लेखन के माध्यम से उनकी बारीक स्त्री दृष्टि को समझा जा सकता है। इंदिरा गोस्वामी ने भारतीय समाज में स्त्री जीवन के यथार्थ को निष्पक्षता के साथ पृष्ठों पर उतारा है। इंदिरा गोस्वामी के प्रथम उपन्यास 'चेनाबेर स्रोत'(1972) से लेकर उनके अंतिम उपन्यास 'थेंगफाखरीर तहसीलदारेर ताँबार तारोवाल' (2009) के माध्यम से उनकी स्त्री दृष्टि के उत्तरोत्तर विकास को समझा जा सकता है। 'चेनाबेर स्रोत' में उन्होंने सोनी तथा पार्वती इत्यादि के माध्यम से श्रमिक वर्ग तथा बाई साहिबा के माध्यम से सभ्रांत और संपन्न वर्ग के स्त्री जीवन को चित्रित किया है। उपन्यास 'अहिरण' में स्त्री पात्रों नन्हीबाई, कदम बाई तथा निर्मला के माध्यम से मध्यम वर्ग तथा निम्न वर्ग की स्त्रियों के जीवन अनुभवों तथा कठिनाइयों को लिपिबद्ध किया गया है। उपन्यास 'नीलकंठी ब्रज' तथा 'दक्षिणी कामरूप की गाथा' में धार्मिक कुरीतियों में जकड़े स्त्री पात्रों का चित्रण इंदिरा गोस्वामी की गूढ़ और बारीक स्त्री दृष्टि का परिचायक है। उपरोक्त वर्णित स्त्री पात्रों के माध्यम से वह उनके संघर्षों को चित्रित तो करती हैं परंतु प्रतिकूल परिस्थितियों से ये स्त्री पात्र हारते भी नजर आते हैं। अपने कालांतर के उपन्यासों 'तेज आरु धूलि धूसरित पृष्ठो' तथा 'थेंगफाखरी तहसीलदारेर ताँबार तारोवाल' में इंदिरा गोस्वामी ने अपेक्षाकृत आत्मनिर्भर, सजग और अपनी पहचान स्थापित कर चुके स्त्री पात्रों को चित्रित किया है|

इंदिरा गोस्वामी जिस दृष्टि से पाठ रचती हैं वह स्थानीय होने के साथ ही वैश्विक संदर्भ से भी जुड़ा हुआ है। इंदिरा गोस्वामी समाज के भीतर वर्ग संघर्ष, सत्ता के खेल और जाति आधारित भेदभाव को भली भांति समझ पाती हैं। इस संबंध में नम्रता पाठक अपनी पुस्तक 'Indira Goswami: Margins And Beyond' में लिखती हैं, "Goswami's texts are intersections of the local and global, the popular and the canonical. The writer's penchant for transcending boundaries gives a new contour and shape to the social cultural domains in her texts. That every character is a representative of the society, that the context comes alive in every evocation of class struggle, power play, caste discrimination and gendered narratives add an interesting semantic load to her texts."(Indira Goswami: Margins And Beyond, Edited by Namrata Pathak and Dibyajyoti Sarma)

स्त्री दृष्टि के संदर्भ में कृष्णा सोबती और इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि दोनों साहित्यकारों ने समाज के विभिन्न वर्ग की स्त्रियों का चित्रण किया है। जहां कृष्णा सोबती ने प्रायः मध्य वर्ग की स्त्रियों के जीवन को चित्रित किया हाँ वहीं इंदिरा गोस्वामी ने अपेक्षाकृत व्यापक स्तर पर सर्वहारा वर्ग की स्त्रियों के जीवन की कठनाइयों को समझा और चित्रित किया है। कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी की स्त्री दृष्टि की विशेषता है कि उन्होंने 'सूरजमुखी अंधेरे के' के दिवाकर, 'समय सरगम' के ईशान, 'दक्षिणी कामरूप की गाथा' के इंद्रनाथ तथा 'अहिरण' के 'मैनेजर हरसुल' रूप में ऐसे पुरुष पात्रों का सृजन किया है जो भावुक और स्त्री-संवेदनाओं को समझने में सक्षम हैं|

अध्याय 6- कृष्णा सोबती और इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में भाषा और शिल्प

प्रस्तुत अध्याय में कृष्णा सोबती और इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में भाषा और शिल्प का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस क्रम में दोनों साहित्यकारों के उपन्यासों की भाषा में स्त्री तत्वों की पहचान के साथ उनके लेखन की विशिष्ट शैली को भी रेखांकित किया गया है। साहित्य के परंपरागत मानदंडों के अनुसार प्रायः स्त्री भाषा को पुरुष भाषा के मानदंडों पर ही मापा जाता। नए समीक्षा मानदंडों के

अंतर्गत आज पाठ को मात्र पाठ, लेखक तथा पाठक के अंतस्संबंधों की दृष्टि से नहीं वरन पाठ किस तरह लिखा गया है, उसे किस तरह पढ़ा गया है या उसे किस तरह पढ़ा जाना चाहिए इन सभी बिंदुओं को समेटा जाता है। स्त्रियों द्वारा लिखित कृति को पढ़ते समय यह समझना आवश्यक हो जाता है कि स्त्रियाँ समाज में सदा ही दोयम स्थिति पर रखी गई हैं। अतः परंपरागत समीक्षा मानदंडों से यह नहीं समझा जा सकता कि स्त्री किस प्रकार सामाजिक दबाव, उपेक्षा इत्यादि को झेलते हुए लेखन कर रही है। स्त्री पाठ को परंपरागत भाषाशास्त्रीय सैद्धांतिकी के आधार पर जांचा और परखा नहीं जा सकता।

कृष्णा सोबती के प्रथम उपन्यास से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने पुरुष लेखन की परंपरागत पद्धति को नहीं अपनाया है। अपने निबंध 'the Laugh of the Medusa' में फ्रेंच स्त्रीवादी हेलेन सिक्सू ने यह तथ्य रेखांकित किया है कि स्त्रियों ने अभी तक सेक्सुअलिटी के विषय में नहीं लिखा है। "Almost everything is yet to be written by women about femininity: about their sexuality, that is, its infinite and mobile complexity…" रोचक तथ्य यह है कि हेलेन ने यह बात यूरोपीय साहित्य के संदर्भ में 1976 में लिखी किन्तु कृष्णा सोबती ने इससे करीब एक दशक पूर्व इस चुनौती को समझा और हिंदी साहित्य में मित्रो के माध्यम से इसे अभिव्यक्ति दी। 'डार से बिछुड़ी', मित्रो मरजानी', 'जिंदगीनामा' की भाषा जहां पंजाब के ग्रामीण इलाके के भाषा संस्कार को गूँथती है वहीं 'तिन पहाड़' की भाषा सभ्रांत वर्ग की खड़ी बोली है। 'चन्ना' की भाषा ग्रामीण और शहरी संस्कृति का मेल है। हिंदी के प्रतिष्ठित साहित्यकार अमृतलाल नागर द्वारा 'जिंदगीनामा' की पाठकों तक संप्रेषणीयता पर प्रश्न उठाया गया था परंतु 'जिंदगीनामा' की सफलता ने इन तर्कों को खारिज कर दिया था। 'ए लड़की' की भाषा माँ और बेटी के बीच खड़ी बोली में संवाद है जो इसको नाटकों की भाषा शैली से जोड़ती है। हिंदी, उर्दू के शब्दों से गूँथी 'दिलोदानिश' की भाषाई बुनावट दिल्ली की सांझी संस्कृति को अभिव्यक्ति देती है। इस तरह का भाषाई वैविध्य कृष्णा सोबती की रचनाओं में प्रयोगशीलता की पुष्टि करता है जो स्त्री भाषा की महत्वपूर्ण विशेषता है। 'गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान' में जिस तरह से कथा फ्लैश बैक और वर्तमान में साथ-साथ चलते हुए विभाजन के बाद की सियासी तस्वीर के

भविष्य का संकेत देते हुए समाप्त होती है। इससे कथ्य के विशिष्ट शिल्प का बोध होता है। 'ए लड़की', 'समय सरगम', 'गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान' में आत्मकथा शैली का प्रयोग किया गया है। कृष्णा सोबती ने सम्बोधन की विशिष्ट शैली को भी अपनाया है। अपनी बात को सीधा-सीधा न कह कर व्यंजना में अभिव्यक्त करना स्त्री भाषा की महत्वपूर्ण विशेषता है। मुहावरों, लोकोक्तियों तथा लोकगीतों का प्रयोग इसी व्यंजना के अंतर्गत होता है। लेखन में स्त्री तत्व, भाव-भंगिमा, टोन, काव्यात्मकता, प्रयोगशीलता तथा आत्मकथा शैली के प्रयोग के कारण कृष्णा सोबती की भाषा स्त्री भाषा के मानकों पर पूरी तरह से खरी उतरती है|

इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों का भाषाई वैविध्य उनके रचनात्मक कौशल को दिखाता है। 'दक्षिणी कामरूप की गाथा' में असम के कामरूप जिले के दक्षिण प्रांत की बोली को प्रधानता दी गई है। 'अहिरण' में इंदिरा गोस्वामी ने स्वयं के वर्क साइट्स के अनुभवों को मैनेजर हरसुल के माध्यम से चित्रित किया है। यही कारण है कि हरसुल पुरुष होकर भी स्त्री मन को समझ पाता है। श्रमिक जीवन पर आधारित अपने तीनों उपन्यासों 'चेनाबेर स्रोत', 'मामरे धरा तारोवाल' तथा 'अहिरण' में इंदिरा गोस्वामी ने वर्क साइट्स पर प्रयुक्त होने वाले औजारों तथा मशीनों इत्यादि के लिए अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया गया है। भाषा में विभिन्न भाषाओं के शब्दों का उचित प्रयोग कलात्मक प्रयोगशीलता है जो इंदिरा गोस्वामी अपने लेखन के माध्यम से करती हैं। 'मामरे धरा तारोवाल' का कथानक उत्तर प्रदेश के राय बरेली जिले में सई नदी पर ऐक्वेडक्ट निर्माण के कार्य पर आधारित है अतः भाषा में असमिया के साथ हिंदी शब्दों का प्रयोग किया गया है। इंदिरा गोस्वामी के लेखन में बिंबों तथा प्रतीकों की महत्ता रेखांकित करते हुए प्रो. निशिकांत मिराजकर लिखते हैं, "Indira's language is genuinely rich with images and symbols. Her images are throbbing with purity, freshness and intensity. The root cause of these qualities is that Indira actually lives the world of her narratives. She experiences it from within and not from outside. There are certain images which occur repeatedly in Indira's novels. For example, thorny

bushes, snakes, birds…Use of images and symbols comes naturally to Indira's pen."(Prof. Nishikant Mirajkar, Indira Goswami and Her Contribution)

कृष्णा सोबती और इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में कथा को प्रवाहमान और रोचक बनाए रखने में उनकी भाषा शैली का महत्वपूर्ण योगदान है। इस दृष्टि से दोनों साहित्यकारों कि भाषा शैली में साम्य दिखाई पड़ता है। कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी दोनों ही साहित्यकारों द्वारा साहित्यिक भाषा में उपभाषाओं और बोलियों का मेल किया गया है। पात्र विशेष और क्षेत्र विशेष के अनुरूप संवादों से युक्त रचनाएं जहां रचनात्मक प्रयोगशीलता को दर्शाती हैं वहीं कथ्य की प्रामाणिकता की भी पुष्टि करती हैं। आत्मकथा शैली विमर्शों के लेखन की शैली मानी जाती है। कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी दोनों ने ही आत्मकथा शैली में उपन्यासों की रचना की है। कृष्णा सोबती ने आंचलिक भाषा का उपन्यासों में सफल प्रयोग किया है तो इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों की भाषा में उत्तर पूर्वांचल क्षेत्र की प्रकृति की छाप अधिक है। इसमें कोई संदेह नहीं कि अपने उपन्यासों द्वारा कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी ने एक निजी भाषा शैली गढ़ी है|

निष्कर्ष-

साठ से अस्सी दशक के बीच में हिंदी कथा साहित्य में कृष्णा सोबती तथा असमिया कथा साहित्य में इंदिरा गोस्वामी ने अपने लेखन के माध्यम से स्त्री समाज के यथार्थ को चित्रित कर इक्कीसवीं सदी की स्त्री लेखन दृष्टि को एक नया आयाम दिया है। स्त्री विमर्श के संदर्भ में कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन कई महत्वपूर्ण तथ्यों को उद्घाटित करता है। जो निम्नवत हैं-

1. भारत में स्वाधीनता के लिए शुरू हुए आंदोलनों से ही नारीवादी आंदोलनों की शुरुआत होती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात दहेज विरोधी आंदोलन, बलात्कार के विरुद्ध संघर्ष, सती प्रथा के विरोध में आंदोलन तथा सुरक्षित पर्यावरण के लिए संघर्ष इत्यादि नारीवादी आंदोलनों के मुख्य मुद्दे रहे हैं। भारत के नारीवादी आंदोलनों के परिप्रेक्ष्य में दोनों साहित्यकारों के उपन्यासों का

अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी ने बलात्कार तथा विधवाओं के संताप से जुड़े मुद्दों को तो उठाया है परंतु दहेज प्रथा का विरोध तथा पर्यावरण की सुरक्षा के लिए संघर्षों इत्यादि के विषय में उनके उपन्यासों में विशेष प्रकाश नहीं डाला गया है|

2. कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी व्यक्ति चेतना की पक्षधर रचनाकार हैं परंतु इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में चित्रित स्त्री पात्रों की तुलना में कृष्णा सोबती के स्त्री पात्रों में व्यक्ति चेतना का स्वर अपेक्षाकृत अधिक मुखर है। उपन्यास 'छिन्नमस्ता' में डोरोथी तथा विधिबाला द्वारा बलिप्रथा का विरोध करने के माध्यम से इंदिरा गोस्वामी ने सामाजिक चेतना को जागृत करने का प्रयास किया है|
3. कृष्णा सोबती तथा इंदिरा गोस्वामी दोनों ने ही अपने उपन्यासों की नायिकाओं के माध्यम से स्त्रियों की सहज यौनिक अभिव्यक्ति का चित्रण किया है। कृष्णा सोबती मित्रो और महकबानो के माध्यम से ऐसी स्त्रियों का चित्रण करती हैं जो अपनी दैहिक इच्छाओं को अपने भीतर ही नहीं रखना चाहती परंतु कृष्णा सोबती के समक्ष कहीं न कहीं नैतिक और अनैतिक का प्रश्न खड़ा हुआ होगा। तभी उनकी ये दोनों नायिकाएं नाचने-गाने और देह बेचने वाले परिवार से संबद्ध रखती हैं। इंदिरा गोस्वामी के यहाँ सौदामिनी, गिरिबाला इत्यादि प्रतिष्ठित परिवारों की महिलाएं हैं परंतु वह यौनिक अभिव्यक्ति की संकुचित सीमाओं का अतिक्रमण करती नजर आती हैं|
4. अरण्या, अम्मू की बेटी, सोबती बाई, दिल्ली विश्वविद्यालय की अध्यापिका तथा थेंगफाखरी ऐसे स्त्रीपात्र हैं जो इस पितृसत्तात्मक व्यवस्था में अपनी एक स्वतंत्र पहचान बनाने में सफल हुए हैं और यह संदेश देते हैं कि स्त्रियाँ आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन अकेले रहते हुए भी अच्छा और सम्मानजनक जीवन जी सकती हैं। थेंगफाखरी क्रांतिकारियों के दल में शामिल होकर पूर्वोत्तर भारत की स्त्री शक्ति का नेतृत्व करती है|

5. ‘सूरजमुखी अंधेरे के’ की रतिका तथा ‘अहिरण’ की निर्मला द्वारा बलात्कार से जुड़े इस पूर्वाग्रह का खंडन किया गया है कि बलात्कार की शिकार महिलाओं को जीवन पर्यंत अवसाद और अपराधबोध ग्रस्त रहना चाहिए|

शोध कार्य के दौरान ICSSR-ERC के सहयोग से लेडी ब्रबॉन कॉलेज द्वारा आयोजित सात दिवसीय ‘अंतरराष्ट्रीय अंतरानुशाषिक जेन्डर सेंसिटाईजेशन’ कार्यशाला में भाग लेने से स्त्री विमर्श संबंधित आधारभूत विचारधाराएं और उनका वर्तमान संदर्भ समझने में बहुत सहायता मिली|

शोध कार्य में प्रयुक्त आधार ग्रंथों तथा सहायक ग्रंथों की सूची निम्नवत है-

आधार ग्रंथ-

1. सोबती, कृष्णा (2018), डार से बिछुरी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

2. सोबती, कृष्णा (2016), मित्रो मरजानी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

3. सोबती, कृष्णा (2014), तिन पहाड़, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

4. सोबती, कृष्णा (2018), सूरजमुखी अँधेरे के, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

5. सोबती, कृष्णा (2016), जिंदगीनामा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

6. सोबती, कृष्णा (2016), ऐ लड़की, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

7. सोबती, कृष्णा (2018), दिलोदानिश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

8. सोबती, कृष्णा (2008), समय सरगम, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

10. सोबती, कृष्णा (2017), गुजरात पकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

11. सोबती, कृष्णा (2019), चन्ना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

12. गोस्वामी, इंदिरा (2010), नीलकंठी ब्रज (हिंदी अनुवाद- दिनेश द्विवेदी), भारतीय ज्ञानपीठ

13. गोस्वामी, इंदिरा (2015), अहिरन (हिंदी अनुवाद- बुद्धदेव चटर्जी), भारतीय ज्ञानपीठ

14. गोस्वामी, इंदिरा (2013), छिन्नमस्ता (हिंदी अनुवाद- पापोरी गोस्वामी), भारतीय ज्ञानपीठ

15. गोस्वामी, इंदिरा (1997), दांतल हाथी उने खोवा हौदा (हिंदी अनुवाद- श्रवण कुमार), साहित्य अकादमी

16. Goswami, Indira, The Bronze Sword of Thengphakhri Tahsildar(English Translation- Aruni Kashyap) Zubaan Publication

17. गोस्वामी, इंदिरा, चेनाबेर स्रोत, चंद्र प्रकाशन, गुवाहाटी

18. Goswami, Indira, Pages Stained With Blood ((English Translation- Pradeep Acharya), Katha Publication, New Delhi

19. गोस्वामी इंदिरा, मामरे धरा तारोवाल, चंद्र प्रकाशन, गुवाहाटी

सहायक ग्रंथ-

1. एंगल्स फ्रेडरिक, परिवार, निजी संपत्ति और राज्यों की उत्पत्ति, प्रगति प्रकाशन

2. जे. एस. मिल, स्त्रियों की पराधीनता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

3. सिमोन दी बौऊवा, Extracts from The Second Sex, Vintage Feminism, London

7 . पितृसत्ता के नए रूप: स्त्री और भूमंडलीकरण, संपादक: राजेंद्र यादव, प्रभा खेतान, अभय कुमार दुबे, 'इक्कीसवीं सदी का नारीवाद(नाओमी वुल्फ), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

8. प्रभा खेतान, उपनिवेश में स्त्री, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

9. पं. रमाबाई, हिंदू स्त्री का जीवन, अनुवाद- शंभू जोशी, संवाद प्रकाशन, मेरठ

10. गर्डा लर्नर, द क्रिएशन ऑफ पैट्रिआर्की, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क

11. युवाल नोआह हरारी, सेपियंस, विंटेज प्रकाशन

12. रोहिणी अग्रवाल, साहित्य का स्त्री स्वर, साहित्य भंडार, इलाहाबाद

13. वर्जीनिया वुल्फ, ए रूम ऑफ वंस ओन', फिंगर प्रिंट क्लासिक, (प्रकाश बुक्स इंडिया)

14. सीमंतनी उपदेश, संपादक: डॉ. धर्मवीर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

15. महादेवी वर्मा, शृंखला की कड़ियाँ, लोकभारती पेपरबैक्स, इलाहबाद

16. कृष्णा सोबती, हम हशमत-1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

17. कृष्णा सोबती, हम हशमत-2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

18. कृष्णा सोबती, हम हशमत-3, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

19. कृष्णा सोबती, हम हशमत-4, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

20. कृष्णा सोबती, सोबती एक सोहबत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

21. कृष्णा सोबती, लेखक का जनतंत्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

22. कृष्णा सोबती, मार्फ़त दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

23. कृष्णा सोबती, शब्दों के आलोक में, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

24. इंदिरा गोस्वामी, जिंदगी कोई सौदा नहीं, हिंद पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली

25. के. पी. प्रमिला, स्त्री अध्ययन की बुनियाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

26. Indira Goswami: Margins and Beyond, Edited by Namrata Pathak and Dibyajyoti Sarma, Routledge, London and New York

27. Sabdra M. Gilbert and Susan Gubar, The Mad Women in the Attic, World view Publications, Delhi

28. अनामिका, स्त्री विमर्श की उत्तर गाथा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली

29. Goswami Indira, Five Novellas About Women, translated by Dibyajyoti Sarma, Niyogi Books, Delhi

30. सुजाता, आलोचना का स्त्री पक्ष, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

31. सुजाता, स्त्री निर्मिति, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली

32. Tharu, Lalita, Women Writing In India, Oxford Publication

33. गिरिधर राठी, कृष्णा सोबती की जीवनी: दूसरा जीवन, सेतु प्रकाशन, दिल्ली

34. Sara Mills, Discourse, Routledge, London and New York

35. जगदीश्वर चतुर्वेदी, स्त्रीवादी साहित्य विमर्श, अनामिका पब्लिशर्स, दिल्ली

36. रोहिणी अग्रवाल, एक नजर कृष्णा सोबती पर, अखिल भारती प्रकाशन

37. The Search For The Sea: The Fictional World Of Indira Goswami, Compilation: Kaikos Burjor Satarawala, B.R. Publishing, Delh

38. कुमार राधा, स्त्री संघर्ष का इतिहास, अनुवाद: रमाशंकर सिंह 'दिव्यदृष्टि', वाणी प्रकाशन

39. जर्मेन ग्रीयर, विद्रोही स्त्री, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

40. निर्मला जैन, कथा और समय का सच, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली

41. राजेन्द्र यादव, आदमी की निगाह में औरत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

42. निवेदिता मेनन, नारीवादी निगाह से, अनुवाद: नरेश गोस्वामी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

43. रोहिणी अग्रवाल, साहित्य की जमीन और स्त्री-मन के उच्छवास

44. Feminist Literary Theory, Edited by Mary Eagleton, Blackwell, Cambridge MA & Oxford UK

45. Indira Goswami(ACompilation on Her Life, Works & Achievements), Manjeet Baruah B.R. Publication

46. महिला लेखन के सौ वर्ष, संपादक- ममता कालिया, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज

47. सच्चिदानंद सिन्हा, संस्कृति और समाजवाद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

48. अनुपमा रॉय, नागरिकता का स्त्री-पक्ष, वाणी प्रकाशन

49. स्त्री गाथा, संपादक- माला बैद, प्रतिध्वनि प्रकाशन, कोलकाता

50. Patricia Stubbs, Women & Fiction, Harwest Press, London